आधुनिक इंडिया फाउंडेशन द्वारा भारतीय चाय मजदूरों के राष्ट्रीय सम्मेलन में माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चन्द कटारिया का भाषण

दिनांक 10 सितंबर 2023, रविवार	समय : 10:30 AM	स्थान : श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्र ऑडिटोरियम

- असम के श्रमिक कल्याण विभाग के माननीय मंत्री श्री संजय किसान जी,
- उद्योग एवं वाणिज्य विभाग के माननीय मंत्री श्री बिमल बोरा जी,
- लोकसभा सांसद श्री कृपानाथ मल्लाह जी और श्री नबा कुमार शरणिया जी,
- पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं असम चाय मजदूर संघ के अध्यक्ष श्री पवन सिंह घटवार जी,
- आधुनिक इंडिया फाउंडेशन के चेयरमैन श्री दिनेश कुमार चौहान जी,
- सम्मानित अतिथिगण,
- विभिन्न चाय बागानों से आए चाय श्रमिक और विद्यार्थीगण
- चाय जनजाति और आदिवासी समुदाय से जुड़े विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधिगण,
- मेरे प्यारे भाइयों और बहनों,

आप सभी को मेरा नमस्कार।

चाय श्रमिकों के इस राष्ट्रीय सम्मेलन में आप सबके बीच उपस्थित होकर मुझे बहुत खुशी हो रही है। मैं इस सम्मेलन की सफलता के लिए शुभकामनाएं देता हूं।

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि असम में चाय उद्योग का 200 वर्ष का गौरवशाली इतिहास रहा है। चाय श्रमिकों तथा चाय जनजाति तथा बागानों में बसने वाले आदिवासी समुदाय के लोगों के योगदान के बिना यह इतिहास अधूरा है। इन्हीं की कड़ी मेहनत और योगदान से हमारा राज्य असम चाय उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है और हमारा भारत विश्व का दूसरा बड़ा चायपत्ती का उत्पादक और निर्यातक देश है।

मुझे बड़ा आश्चर्य होता है कि देश के राजस्व एवं आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले चाय जनजातियों की स्थिति देश की आजादी के बाद भी दयनीय रही। उन्हें अपने हक के लिए लंबे समय तक आंदोलन करना पड़ता था। उन्हें बुनियादी सुविधाएं भी उपलब्ध नहीं होती थी। लेकिन अब तस्वीर बदल रही है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री श्री हिमंत विश्व शर्मा के नेतृत्व में चाय जनजाति एवं आदिवासी समुदाय का विकास हो रहा है। सरकारी मशीनरियों के सहयोग से असम के चाय श्रमिकों के सामाजिक एवं आर्थिक विकास के लिए प्रयास किए जा रहे हैं।

केंद्र सरकार ने पूर्वोत्तर क्षेत्र का समग्र विकास सुनिश्चित करने तथा शांति स्थापित करने के लिए कई कदम उठाए हैं। सरकार की 'एक्ट ईस्ट नीति' ने संभावनाओं के द्वार खोलने के साथ इस क्षेत्र की जनता में नई उम्मीद भी पैदा की है।

पूर्वोत्तर भारत को उत्पादन और विकास के हब के रूप में विकसित करने की महत्वाकांक्षी कार्ययोजना का क्रियान्वयन किया जा रहा है। इस उपेक्षित क्षेत्र को आर्थिक रूप से अधिक गतिशील और समृद्ध बनाया जा रहा है। इस क्षेत्र में रेल, सड़क, वायु और अंतर्देशीय जलमार्ग कनेक्टिविटी में सुधार पर ज़ोर दिया गया है। इससे तकनीक और विचारों के आदान-प्रदान एवं प्रवाह में भी गुणात्मक वृद्धि हो रही है। सरकार ने संवाद और संवेदनशीलता से इस क्षेत्र के वर्षों से लंबित कई मुद्दों का भी समाधान किया है।

सरकार ने चाय जनजातियों और चाय श्रमिकों के सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। चाय बागानों के 428 विद्यालयों को राज्य सरकार के अंतर्गत लाया गया है। इन विद्यालयों में टीईटी (TET) शिक्षकों को नियुक्त किया गया। इन स्कूलों को सरकार द्वारा निःशुल्क पुस्तकें, यूनिफॉर्म, मीड-डे-मिल उपलब्ध कराए जा रहे हैं।

इसके अलावा चाय जनजाति और आदिवासी समुदाय के विद्यार्थियों को नियमित रूप से छात्रवृत्ति प्रदान की जा रही है। विद्यार्थियों को तकनीकी शिक्षा और प्रशिक्षण भी प्रदान किया जा रहा है। बेरोजगार युवाओं को "शहीद दयाल दास पाणिका स्वनियोजन योजना" के तहत स्वरोजगार के लिए 25000 रुपए की आर्थिक सहायता भी प्रदान की जा रही है।

खेल के क्षेत्र में चाय जनजाति और आदिवासी समाज के युवाओं को प्रोत्साहित करने के लिए भी कई विशेष कदम उठाए गए हैं। मुझे बताया गया है कि पहली बार चाय जनजाति और आदिवासी महिलाओं के लिए "असम टी गोल्डन कप" के नाम से महिला फुटबाल टूर्नामेंट का आयोजन किया गया। लड़कों के लिए 2 फुटबाल अकादमी और लड़कियों के लिए 1 तीरंदाजी अकादमी खोली गई है।

मित्रों,

चाय श्रमिकों की प्रमुख समस्या न्यूनतम दैनिक मजदूरी रही है। लंबे समय तक चले आंदोलन के बाद चाय बागान के मजदूरों की दैनिक मजदूरी को बढ़ाकर 232 रुपए की गई है।

चाय जनजातियों एवं आदिवासी समुदाय की समस्याओं के समाधान के लिए सरकार ने प्रतिबद्धता दिखाई है। सरकार ने "हमदेर मोनेर कोथा" कार्यक्रम के अंतर्गत 7 उपसमितियों का गठन किया है। ये उप समितियां इन समुदायों के स्वास्थ्य, शिक्षा, खेल, संस्कृति, आर्थिक सशक्तिकरण और अन्य विषयों पर अपना सुझाव देगी। इन्हीं सुझावों पर सरकार उनके विकास के लिए कार्य करेगी।

देवियों और सज्जनों,

किसी भी जाति, समुदाय तथा क्षेत्र के विकास में सरकारी मशीनरियों के साथ-साथ स्वयंसेवी और सामाजिक संगठनों की भी महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। चाय जनजाति और आदिवासी समुदाय के संगठन भी अपने समुदाय के उत्थान में महत्वपूर्ण निभा सकते हैं।

मैं आज इस मंच से चाय जनजाति और आदिवासी समुदाय के संगठनों से आह्वान करता हूं कि वे अपने समाज के लोगों को शिक्षा, उद्यमिता, स्वरोजगार के लिए प्रेरित करें तथा सरकार की विकासमूलक योजनाओं के प्रति जागरूक करें।

आशा करता हूं कि चाय श्रमिकों का यह राष्ट्रीय सम्मेलन विचार-विमर्श और स्वस्थ चर्चा के माध्यम से चाय श्रमिकों के आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए नया मार्ग प्रशस्त करेगा। इस राष्ट्रीय सम्मेलन की सफलता के लिए हृदय तल से मेरी शुभकामनाएं।

धन्यवाद,

जय हिन्द !